आपातकाल में सृजन फुलवारी

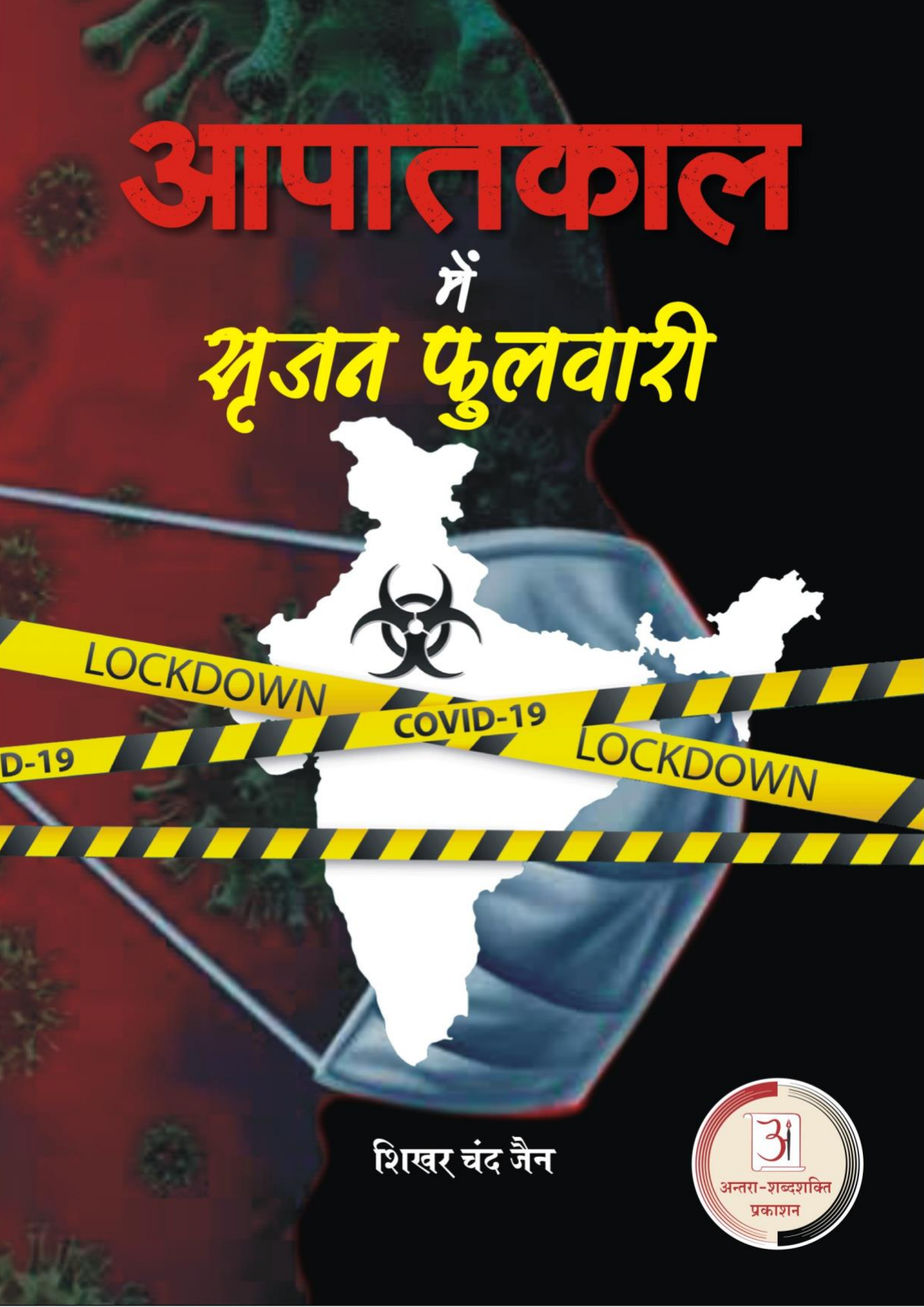

शिखर चंद जैन

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

(लघुकथा संग्रह)

शिखर चंद जैन

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

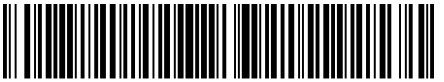
978-93-5372-207-4

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय - 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण - 2020, शिखर चंद जैन
मूल्य - 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY SHIKHAR CHAND JAIN

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	कोरोना के मत्थे	6
2.	मदद के हाथ	7
3.	पुरानी साइकिल	8
4.	हैसियत	8
5.	सर्दी का जुगाड़	9
6.	काम का आदमी	10
7.	वो खास केक	11
8.	मजबूरी	12
9.	पराया धन	13
10.	बड़े लेखक बनिए	13
11.	समझदार बिटिया	14
12.	गरीबी उन्मूलन	14
13.	जमाना खराब है!	15
14.	अच्छी बहू	16
15.	मदद में फर्क	17
16.	पॉलिटिक्स	18
17.	वैलेंटाइन गिफ्ट	19
18.	पर्यावरण की चिंता	20
19.	हिंदी दिवस	21

कोरोना के मत्थे

पूरे शहर में कोहराम मचा हुआ था। कोरोना के बढ़ते हुए कहर से निपटने के लिए लॉक डाउन का सख्ती से पालन कराया जा रहा था।सरकार ने ऐलान कर दिया था कि फँसे हुए मजदूरों के लिए राशन की पूरी व्यवस्था की गई है,कोई न घबराए। सरकारी अधिकारी चारों तरफ गश्त लगा रहे थे।

आज शहर के 5 हॉटस्पॉट एरिया से अचानक बढ़े हुए मामलों ने प्रशासन की नींद हराम कर दी। इसलिए इन इलाकों में सबसे बड़े अफसरों को गश्त के लिए भेजा गया।

एक जगह सड़क किनारे चार लाशें पड़ी देख अफसर नजदीक गए। इधर उधर के लोगों से पूछताछ करने पर पता चला कि ये भूख से मर गए।राशन 10दिन पहले आया था, वो भी नाम मात्र का। तब से आजतक किसी ने झाँका तक नहीं।

अफसरों ने आपस में बातचीत की। चिंता हुई कि अगर भूख से मरने की बात प्रेस और मुख्यमंत्री तक पहुंच गई तो उनकी बड़ी बदनामी होगी और हो सकता है कड़ी कार्यवाही हो जाए।

तय किया कि इससे अच्छा है इन्हें इस महामारी का ही शिकार बता दिया जाए। अफसरों ने तुरंत रजिस्टर में दर्ज किया कोविड 19 से चार और मरे।

मदद के हाथ

"भैया आपको अचानक ये क्या हो गया? 3000 पैकेट ब्रेड और 1000 केक गरीबों की बस्ती में बांटने के लिए जा रहे हैं ?भला इसकी क्या जरूरत थी ?आप चाहते तो आलू की सूखी सब्जी और रोटी बनवा लेते हैं या दाल- चावल वगैरह मंगवा लेते ।।।और बुरा मत मानिएगा वैसे तो आपने अभी तक किसी को हजार रुपए भी नहीं दिए, जबकि कितनी संस्थाओं वालों ने आपसे मिन्नतें की।"

आश्चर्य में डूबे संजय ने अपने भैया दीनबंधु जी के सामने एक साथ कई सवाल उछाल दिए।

उसे ताज्जुब हो रहा था कि अचानक रातों-रात भैया का हृदय परिवर्तन कैसे हो गया?

मशहूर उद्योगपति दीनबंधु जी ने मुस्कुराते हुए कहा, "क्या हमारा कर्तव्य नहीं बनता है मुसीबत के समय गरीबों की मदद करने का?"

"भैया बनता तो है लेकिन जैसा कि मैंने कहा रोटी सब्जी,दाल रोटी, खिचड़ी आदि भी तो बांटी जा सकती थी?"

दीनबंधु जी मुस्कुरा कर बोले, "पगले हमारी ब्रेड और केक आज की एक्सपायरी डेट के हैं, जिन्हें डिलीवरी वैन उपलब्ध न होने के कारण समय पर दुकानों पर नहीं पहुंचाया जा सका और आज अंतिम तारीख है। आज वैंस तो आ गयीं लेकिन इस माल कोई दुकानदार लेने को तैयार ना होगा। क्योंकि शाम तक ये बेकार हो जायेंगे, तो क्यों ना आज इन्हें बाँटकर थोड़ा मदद का हाथ बढ़ा दिया जाए। वैसे भी हम पर चारों तरफ से सवाल उठाए जा रहे थे, मदद न करने की वजह से।हाँ, तुम अपने विज्ञापन वालों को बोलकर मीडिया रिपोर्टिंग जरूर करवा देना।"

संजय अपने भैया की चालाकी और सूझबूझ पर खुश हो गया। आम के आम और गुठली के दाम इसे कहते हैं।

पुरानी साइकिल

“इस पुरानी साइकिल को बेच क्यों नहीं देते? फालतू जगह घेर रही है। घर में स्कूटी है, बाइक है फिर इसकी क्या जरूरत है? बेवजह कलेजे से चिपका कर बैठे हो।” नीता को आज अपना यह डायलॉग याद आ गया जो वह अक्सर चेतन को सुनाती रहती थी। रात के 2:30 बजे 4 किलोमीटर दूर स्थित रात्रिकालीन केमिस्ट की दुकान से उसके अस्थमा के कैप्सूल ना आते तो पता नहीं क्या होता। वैसे तो वह हमेशा अपनी दवा एक्स्ट्रा रखती थी लेकिन बहन की शादी में इतनी व्यस्त हुई कि उसे पता ही न चला कि कब खत्म हो गए। रात को सांस उखड़ी तब पता चला घर में रोटाकैप्स कैप्सूल नहीं थे। स्कूटी के दोनों टायर पंचर थे और बाइक तो हफ्ते भर से खराब पड़ी थी तब चेतन अपनी इसी पुरानी साइकिल से उसके लिए जीवन संजीवनी लेकर आए थे। नीता समझ गई कि साइकिल फालतू जगह नहीं घेर थी बल्कि उसने घर में उसकी जगह सुरक्षित कर दी थी।

हैसियत

सुरेश जी अखबार के पन्ने पलटते हुए ठिठक गए। शोक संदेश वाले पेज पर मशहूर व्यापारी हीरालाल जी की मृत्यु और शोकसभा का विज्ञापन छपा था। सुरेश जी बीते दो साल से दुकान पर नहीं बैठ रहे थे, इसलिए बेटे को बुलाकर विज्ञापन दिखाते हुए पूछने लगे, "देखो तो, ये क्या है? बीमार थे क्या?" बेटा भी चौंक गया। बोला, "नहीं, अभी तीन दिन पहले ही तो दुकान पर आकर पेमेंट ले गए थे। तब तो बिलकुल स्वस्थ थे। लेकिन मैं तो इन्हें बड़ी ऊँची हैसियत का समझता था।" सुरेश जी चौंके, "मतलब?" बेटे ने कहा, "पापा! हीरालाल जी शहर के बड़े व्यापारियों में हैं। फिर भी इतने छोटे आकार का विज्ञापन!"

सर्दी का जुगाड़

तोता और मैना तीन महीने बाद एक साथ मिले थे। तोते ने प्यार जताते हुए पूछा, कैसी हो प्यारी मैना? सुनाओ अपने हाल।

मैना बोली, बस मस्त। हम पंछी तो वैसे ही बेफिक्रे कहलाते हैं। हाँ! सर्दी ने दस्तक दे दी तो आदमी जरूर चिंतित है। सब सर्दी से बचाव के जोगाड़ में लगे हैं।

तोता हंस कर बोला, इंसान की तो जात ही ऐसी है। हर वक्त भविष्य की चिंता में ही घुलता रहता है। तुमने क्या देखा वो तो बताओ।

मैना बोली, तोते! एक दिन मैं एक बहुत बड़े उद्योगपति के निजी उद्यान में लगे अनार के पेड़ पर बैठी थी। वो फोन पर किसी विदेशी दोस्त को वहां से सर्दी के लिए उम्दा सुरा और कुछ गोरी सुंदरियाँ भेजने को कह रहा था। मैं समझ गयी कि यह एक ऐय्याश किस्म का इंसान है। मुझे उससे नफरत हो गयी। मैं उड़कर एक छोटे से बगीचे में चली गयी। वहां एक दुकानदार मॉर्निंग वाक के लिए आया हुआ था। वह अपने साथियों से कह रहा था कि अब गोंद के लड्डू बनवाने पड़ेंगे और बेटे से कहूँगा कि च्यवनप्राश के दो डिब्बे लाकर रख दे ताकि भर सर्दी निश्चिन्त रहे। तीसरे दिन मैं सड़क किनारे लगे एक पेड़ पर बैठी थी तो कुछ निम्न मध्यमवर्गीय लोग सर्दी के लिए स्वेटर, मोटी चादर और रजाई खरीदने की बात कर रहे थे। अगले दिन एक गाँव में पहुंची तो कुछ महिलाएं आपस में बात कर रही थीं कि सर्दियाँ आने वाली हैं। बेटे से कहेंगे की अलाव के लिए अभी से सूखी लकड़ियाँ इकट्ठा कर के रख लें। बस आज मैं यहां आ गयी। अब कुछ तुम सुनाओ।

तोता बोला, हाँ री मैना! सर्दियों की चिंता तो सबको सताती है। मैंने आज एक गरीब को अपनी पत्नी से बात करते सुना। कह रहा था

कि सर्दियां आ रही हैं अब शरीर को गर्म रखने के लिए रात की पाली में रिक्शा चलाएगा या बस अड्डे पर बोझ ढोने का काम करेगा। इससे शरीर में गर्माहट रहेगी। लेकिन उसकी पत्नी बोली कि आखिर कितनी मेहनत करोगे तुम वैसे ही काफी कमजोर हो गए हो। ये सब छोड़ो। पुआल को बोरे में सी कर गर्म ओढ़ना बना लेंगे। मौसम ज्यादा खराब हुआ तो बगल में श्मशान है ही चिताओं की गर्माहट का सहारा ले लिया करेंगे। हर आदमी सर्दी से बचाव का जोगाड़ कर रहा है अपनी हैसियत के अनुसार।

काम का आदमी

"अरे अविनाश, तुमने सबको वेडिंग कार्ड पोस्ट तो कर दिए न? लिस्ट दिखाना जरा"- शैलेश ने अपने छोटे बेटे से कहा।

"हाँ पापा, सभी मित्रों, रिश्तेदारों और बिजनेस सर्किल वालों को दे दिए।" लिस्ट पकड़ाते हुए अविनाश ने कहा।

शैलेश ने लिस्ट देखी। पार्षद, विधायक, फैमिली डॉक्टर, मेयर, प्रिंसिपल, थानेदार, पत्र-पत्रिकाओं के संपादकों सबको कार्ड दे दिए गए थे। लेकिन एक संपादक का नाम काटा हुआ था।

शैलेश ने चौंक कर पूछा, "अरे, हमारे अजीज उपाध्याय जी का नाम क्यों काट दिया। कितने मिलनसार व्यक्ति हैं।"

अविनाश ने कहा, "पापा, अब उन्हें कार्ड देना बेकार है। वे अखबार छोड़ चुके हैं और अभी तो किसी अखबार को जॉइन भी नहीं किया। फिर क्या फायदा।"

शैलेश बेटे की समझदारी से काफी इम्प्रेस हुए।

वो खास केक

शहर के नामचीन उद्योगपति जालान साहब परेशान हो चुके थे। उनका 7 वर्षीय बेटा अर्णव एक विशेष केक खाने की जिद कर रहा था। वे कल से अब तक उसे शहर की सारी अच्छी बेकरी शॉप्स घुमा चुके थे लेकिन वहाँ उसे चन्दू वाला केक नजर नहीं आया।

असल में जालान साहब की हाउस मेड लक्ष्मी के बेटे चन्दू ने कल अर्णव को कोई खास केक खिला दिया था। वह कभी कभी अपनी माँ के साथ जालान हॉउस आ जाता था। उसे अर्णव के साथ खेलना अच्छा लगता था। अर्णव भी उसके आने से बहुत खुश हो जाता था।

नौकरानी से केक के बारे पूछने में जालान साहब को संकोच हो रहा था इसलिए वे अर्णव को शहर की सभी नामी बेकरी शॉप्स में ले गए थे।

अंत में उन्होंने अपनी पत्नी से पता लगाने को कहा। मिसेज जालान ने लक्ष्मी से पूछा, "अरे लक्ष्मी कल तेरे बेटे ने अर्णव को क्या खिला दिया। वो कल से रो रहा है।"

लक्ष्मी बुरी तरह डर गयी। हाथ जोड़ कर बोली, "माफ़ करना मेमसाब! मैं उसे डाटूंगी। "मिसेज जालान बोलीं, "अरे! तू गलत समझ रही है। कल उसने कोई केक खिलाया था। बस अर्णव वैसा ही केक खाना चाहता है। इसलिए पूछा।"

लक्ष्मी सिर झुका कर बोली, "मैडम हम गरीबों के पास केक कहाँ से आएगा। वो चन्दू रोज जिद करता था तो मैंने चाय से भीगे मैरी बिस्किट दो ब्रेड के बीच लगा दिए थे और ब्रेड पर जरा सी मलाई लगाकर ऊपर से 4-5 चम्मच चाय डाल दी। बस बच्चे का मन बहल गया।"

मिसेज जालान को चन्दू के केक की रेसिपी मिल गयी थी। उन्होंने भी अपने बेटे के लिए वो खास केक बना दिया।

मजबूरी

शिवानी को अपनी आँखों पर यकीन नहीं हो रहा था। गाड़ी अब भी ट्रैफिक सिग्नल पर खड़ी थी। ये तो नीना की छोटी बेटी शालू है। रात 11 बजे टैक्सी में बैठ कर कहाँ जा रही है? हे राम! यह सिगरेट पीती है? टैक्सी में पीछे न बैठकर ड्राइवर के बगल में क्यों बैठी है?। और फोन पर इतनी रुडली किससे बात कर रही है।

एक साथ दर्जनों सवाल शिवानी के दिमाग में गूंजने लगे।

शिवानी एक शादी से लौट रही थी। वो तो उसकी टैक्सी शालू की टैक्सी के लगभग समानांतर थी इसलिए उसने यह सब सुन और देख लिया।

शिवानी रात भर ठीक से सो न पायी। कहीं शालू किसी गलत लाइन में तो नहीं पड़ गयी।

शिवानी नीना को यह सब जल्द से जल्द बताना चाह रही थी।

सुबह 11 बजते ही वह नीना के घर जा पहुंची। उसने एक ही सांस में सारी बातें उसे बता दी।

नीना हंसने लगी। बोली, अरी बहन! तू चिंता न कर। यह सब एक्टिंग है शालू की। ऐसा करना उसकी मजबूरी है। जब लेट हो जाती है तो उसे ऐसा करना पड़ता है तू तो जानती है कि जमाना कितना खराब है। सीधी सादी लड़की का रास्ते में चलना मुश्किल है। इसलिए उस समय वह एक बोल्ड लड़की का भेष धारण कर लेती है।

पराया धन

“संज्ञा, सुनो! तुम्हारे चाचाजी के यहां पोता हुआ है। मैं और पापा 10 दिनों तक मंदिर में दिया नहीं जलाएंगे। अब तो तुम ही 10 दिनों तक दिया-बत्ती जलाना।” नवीना ने अपनी 16 वर्षीय बेटी संज्ञा से यह बात कही तो वह चकित रह गई। संज्ञा ने पूछा, "मम्मी ऐसा क्यों? आप और पापा दिया क्यों नहीं जलाएंगे?

“बेटी जब घर में बच्चे का जन्म होता है, तो 10 दिनों तक सूतक रहता है इसलिए घर के सदस्य पूजा पाठ नहीं करते।” नवीना ने समझाया।

संज्ञा की जिज्ञासा अभी शांत नहीं हुई थी। उसने दोबारा पूछा, "लेकिन, मैं भी तो घर की सदस्य हूं ना।” नवीना ने हंसते हुए कहा, "अरे पगली, तू नहीं समझेगी। तू घर की सदस्य है। लेकिन बेटियां पराया धन होती हैं। इसलिए ऐसी ही परंपरा है।” मम्मी की बात सुनकर संज्ञा की आंखों में नमी आ गई। उसने इतना ही कहा,"तो इसका मतलब बस बेटे ही अपने होते हैं और बेटियां पराई।"

बड़े लेखक बनिए

एक प्रकाशक ने विज्ञापन दिया,"बड़े लेखक बनिए"। नवोदित लेखकों के एक मित्र ने विज्ञापन दोस्तों को दिखाया। एक उदीयमान लेखक ने कहा, "हाँ, आजकल तो बनिए ही बड़े लेखक बन रहे हैं।"

दूसरे संघर्षशील लेखक ने गहरी ठण्डी साँस लेते हुए कहा,"सच है यार! बड़े लेखक बनिए न हों तो किताब कैसे बेच सकते हैं। "तीसरे ने कहा," यार, मुझे ये समझ में नहीं आया कि किसी को बड़ा लेखक प्रकाशक बनाता है या पाठक? क्या बड़ा लेखक बनना खुद लेखक के भी बस में होता है?"

उत्तर किसी के पास नहीं था, बस प्रश्न उछलते गए।

समझदार बिटिया

कान में ईयरफोन लगे हुए ही बस से उतर चुकी एक बिटिया को मीना समझाया, "देखो रास्ते में ईयरफोन कान में लगाकर नहीं चलना चाहिये, दुर्घटना हो सकती है। बातचीत या गाना सुनने पर माइंड डाइवर्ट होता है, पीछे से आ रही गाड़ी की आवाज नहीं आती।"

बिटिया बोली, "आंटी! ये ईयरफोन बस यूँ ही लगा रखा है। न गाने सुनती हूँ न बात करती हूँ। इसके लगे होने से बगल से गुजर रहे लफंगे गंदी बातें नहीं बोलते। क्योंकि उन्हें लगता है कि ये तो गाना सुन रही है, हमारी बकवास सुनेगी नहीं, फिर बोल कर क्या फायदा!"

मीना बिटिया की समझदारी की कायल हो गई।

गरीबी उन्मूलन

केदू अपनी पाव भाजी की ठेली लेकर तेजी से चौक की ओर चला जा रहा था। आज उसने दोगुना सामान खरीदा था। दीपावली के मौके पर बाजार में खरीददारी के लिए लोगों की भीड़ रहने लगी थी इसलिए उसे ज्यादा बिक्री की उम्मीद थी। फिर छोटका और मुन्नी दोनों बच्चों ने छठ पूजा पर नए कपड़े और बस्ता दिलाने की मांग भी थी,उसकी पत्नी चैती ने भी साड़ी,कांच की चूड़ियों के नए सेट और नई चप्पल दिलाने को कहा था। इसीलिए उसने सोचा था कि अभी से कुछ पैसे जमा करने लगेगा तो छठ पूजा तक सब सामान का जुगाड़ हो जाएगा और उसका नया बरमूडा और गमछा भी आ जाएगा। तरह-तरह की कल्पनाएं करता हुआ केदू ज्योंही चौक पर पहुंचा, देखा वहां पुलिस वाले सभी हाकरों पर डंडे बरसा कर उन्हें खदेड़ रहे हैं। पूछने पर पता चला कि छठ पूजा तक वहां कोई ठेला या खोमचा लगाने पर प्रतिबंध लग गया है। चौक में एक विशाल पंडाल बनेगा, जहां "गरीबी उन्मूलन" पर सेमिनार होगा। सेमिनार में बोलने के लिए बड़े-बड़े समाजसेवी, अर्थशास्त्री और सरकारी मुलाजिम आएंगे। रुआंसा केदू अपने साथी हॉकर से इतना ही कह पाया, "ससुर गरीबी उन्मूलन पर विचार होगा कि गरीब के उन्मूलन पर,.."

जमाना खराब है!

पापा बहुत चिंतित रहते हैं। रोज सुबह अखबार में वही नकारात्मक बातें, कहीं मारपीट, कहीं हत्या, कहीं बलात्कार, कहीं छेड़छाड़, कहीं यौनशोषण तो कहीं मीटू का पर्दाफाश। रोज कम से कम एक बार जरुर कह देते हैं मम्मी से, "उफ्फ! क्या हो गया इस जमाने को! शरीफ आदमी का रहना मुश्किल हो गया है, ऐसा लगता है कि लड़कियों का तो इस दुनिया में जन्म लेना भी गुनाह हो गया है।"

लगता है, अपनी बड़ी होती बेटी को देख, पापा बहुत चिंता करने लगे हैं। कभी मुझे समझाते हैं,तो कभी मम्मी को। मुझे तो कई बार समझाया है, रास्ते में जरा सावधानी से चला करो। लोगों की नीयत बहुत खराब हो गयी है। शैतान प्रवृत्ति के लोगों से जरा दूर दूर रहा करो। सच तो यह है कि मैं भी डरी डरी रहने लगी हूँ। बाजार अकेली जाने की बजाय, कभी मम्मी, कभी सहेली को साथ ले लेती हूँ।

कल मुझे कॉलेज से लौटने में काफी देर हो गयी। मैं बस में थी। रास्ता काफी जाम था और बस बहुत देर से एक ही जगह खड़ी थी। तभी मैंने भीड़ में पापा को देखा। मैंने महसूस किया कि पापा बार-बार जानबूझ महिलाओं के हुजूम के बीच में घुस रहे थे।

जबकि वे आसानी से उनके बगल से भी निकल सकते। तभी मैंने देखा,.. छी! पापा ने बहुरत गंदे तरीके से एक आंटी को पीछे से टच किया,.. उफ़्फ़! यह देखा मैंने। लेकिन मैंने जो देखा वो बिल्कुल सच था। उस आंटी ने पीछे मुडकर कसकर चांटा मार दिया था पापा को भरे बाजार में। वे रुआंसी हो कर कह रही थीं, जमाना कितना खराब है! जिनको अंकल और दादाजी समझते हैं, वे ही हमसे ज्यादा चिपकते हैं। मैं स्तब्ध थी। आंटी ने भी वही कहा जो पापा अक्सर कहते थे। जमाना

कितना खराब है। सब खुद को शरीफ और दूसरे को ही शैतान समझते हैं। अपनी बेटी, माँ और बीवी को ही इंसान समझते हैं।

जमाना सच में बहुत खराब है। घर आकर न मैंने कुछ कहा, न पापा ने। लेकिन अगली सुबह उन्होंने फिर कहा, "जमाना बहुत खराब है!"

अच्छी बहू

"भई, इतनी क्या बातें रहती हैं तुम दोनों माँ-बेटियों के पास? रोज एक-एक घण्टे बात करती हो?" रमेश ने पूछा।

"सुना नहीं तुमने? दोनों भाभियों ने नाक में दम कर रखा है। महारानियाँ सुबह सात बजे उठती हैं, जींस टॉप पहनती हैं। नखरे दुनिया भर के। महीने में एक बार मूवी पक्की देखनी ही है। मम्मी ने सोचा था कि अच्छी बहुएं आ जाएं तो जिंदगी मजे से कट जाएगी। लेकिन आज नौ साल हो गए शादी को लेकिन चोंचले देखो। एक हम हैं,सुबह छह बजे नहा लेते हैं और मंदिर भी हो आते हैं।" सुनीता ने तीखी आवाज में कहा।

रमेश पूछना चाहता था कि अच्छी बहू सुबह छः बजे नहाकर मंदिर जाने से होते हैं कि नौ साल बाद भी सास ससुर के साथ रहने और संयुक्त परिवार को निभाने से, जो उसकी भाभियाँ बखूबी निभा रही थी। जबकि सुनीता ने शादी के छः महीने बाद ही क्लेश करके सास-ससुर यानी रमेश के माता पिता से अलग फ्लैट लेने के लिए उसे मजबूर कर दिया था। लेकिन वह चुप रह गया कलह के डर से।

सुनीता ने उसकी माँ से झगड़ा भी इसी बात पर किया था कि वे रोज अपनी बेटियों से फोन पर बात क्यों करती हैं।

मदद में फर्क

बाजार जाते हुए रविकांत ने अपने दोस्त नीलमणि से पूछा, "यार, एक बात पूछूं? तुम बुरा मत मानना?"

नीलमणि ने कहा, "जरूर पूछ भाई। मैं बुरा मान कर भी तेरा क्या बिगाड़ लूंगा।

रविकांत ने कहा, 'तुम दोनों भाइयों के स्वभाव में इतना अंतर क्यों है? जब तुम सुबह सब्जी लेने जाते हो तो एक-दो जगह भाव जरूर पूछते हो मगर किसी सब्जी वाले से ज्यादा मोलभाव नहीं करते। पर रास्ते में तीन-चार भिखारी भी मिलते हैं उन्हें कभी एक पैसा भी नहीं देते। जबकि तुम्हारा छोटा भाई लालमणि हर भिखारी को कुछ न कुछ जरूर देता है पर सब्जी वालों को पूरी तरह निचोड़कर कर फल सब्जियां खरीदता है। यानि गरीबों के प्रति हमदर्दी तो दोनों में है लेकिन इसका स्वरूप अलग है।"

नीलमणि ने कहा, "भाई, यह सोच का फर्क है। मेरा मानना है कि मेहनतकश इंसान की हमेशा मदद करो और उसे जिंदगी में आगे बढ़ने का हौसला दो लेकिन कभी किसी मुफ्तखोर को बिल्कुल प्रोत्साहन मत दो। क्योंकि तुम उसे चाहे जितना दे दो लेकिन वह मुफ्तखोर ही रहेगा और हमेशा मांगता ही रहेगा। बस इतनी सी बात है।"

पॉलिटिक्स

“सर पकड़ा-धकड़ी तो बहुत जोर चल रही है। यह आंच तो कल आप तक भी आने वाली है, इस बात में जरा भी संदेह नहीं। पुराने अफसर भी अब रिटायर हो चुके हैं, आपको भीतर से कोई खास फीडबैक भी नहीं मिल पाएगा।” नेताजी के खास खबरी ने फोन पर बताया, जो अभी भी एक महत्वपूर्ण मंत्रालय में कर्मचारी था।

नेताजी ने सहयोगी और वकीलों से विचार विमर्श किया। उनकी सलाह पर अमल करते हुए समझौते की कोशिशें हुई और सरकार की प्रशंसा में 2-4 बयान भी जारी किए गए। मगर नया प्रधान बड़ा कड़क और सख्त था। समझौता ना होते देख नेताजी के शातिर वकीलों ने सलाह दी, "भाई साहब! आप सरकार के खिलाफ जहर उगलना शुरू कर दो। अनाप-शनाप बयान जारी करो।”

नेता जी घबराए। बोले, "यार मरवाओगे क्या?”

वकीलों ने फुसफुसा कर कहा आप कैसे नेता हैं। इतनी पॉलिटिक्स भी नहीं समझते? अरे कल को आप पर सरकारी शिकंजा कसेगा तो हम दहाड़-दहाड़ कर कहेंगे कि आप सरकार का खुलकर विरोध कर करते थे, इसलिए बदले की कार्यवाही की गई है।

”नेताजी के चेहरे पर रहस्यमयी मुस्कान तैर गई।”

वैलेंटाइन गिफ्ट

मधुरिमा ने कम से कम 4 बार फोन करके कहा था इसलिए एकांशी को उसकी बर्थडे पार्टी में जाना पड़ा। वरना वह वैसे ही बीमारी से परेशान रहती थी। मधुरिमा ऊपर से नीचे तक जेवर से लदी थी। दावत के लिए शहर का सबसे महंगा कैटरर नियुक्त किया था मधुरिमा के पति अर्पित ने। एकांशी बोली,"बड़ी लक्की है रे तू। अर्पित कितना चाहता है तुझे। गिफ्ट में डायमण्ड सेट दिया है न!" मधुरिमा मुस्कुरा कर रह गयी।

एकांशी रास्ते में सोच रही थी,... एक ओर अर्पित जैसा समर्पित और प्यार करने वाला पति है और दूसरी ओर उसका पति रघुवीर है, जो न कभी आई लव यू कहता है न जोरदार तरीके से बर्थडे पार्टी मनाता है।

खैर, वह घर आई और अपने पीसी पर बैठ गयी। कई जरुरी लेटर ड्राफ्ट करने थे। तभी रघुवीर आ गया। वह बुरी तरह अपसेट था।

एकांशी ने जोर देकर पूछा तो उसने कहा, "तुम्हारी टेस्टिंग की रिपोर्ट्स आ गयी हैं। अब हम देर नहीं कर सकते। तुम्हें इमीडिएटली किडनी ट्रांसप्लांट करवाना पड़ेगा। विदिन अ वीक या और भी जल्दी।

"एकांशी का कलेजा मुंह को आ गया। फफक कर रोते हुए बोली," लेकिन कैसे? कौन देगा मुझे इतनी जल्दी अपनी किडनी। कोई मजाक है क्या?"

रघुवीर ने एकांशी को अपनी मजबूत बाहों में भर लिया। बोला, "जानू! मैं हूँ ना। अचानक नहीं। एक महीने से यह सब चल रहा है। मेरी पूरी टेस्टिंग हो चुकी है। पैसों का इंतजाम हो चुका है। मेरी एक किडनी काफी होगी तुम्हारे लिए। पूरी तरह सूटेबल हूँ डॉक्टर ने ठोक बजाकर देख लिया है। हा हा हा"।

एकांशी अब और भी जोर से रोने लगी। उसे पता था कि मधुरिमा के पति ने पिछले ही महीने मधुरिमा के लिए ब्लड डोनेट करने से मना कर दिया था। उसका मानना था कि इससे कमजोरी आती है। फिर मधुरिमा ने अपने भाई को हॉस्पिटल बुलवा कर ब्लड अरेंज करवाया था।

एकांशी ने रघुवीर को जोर से बाहों में भींच लिया और पूरी ताकत से बोली, "आई लव यू,.." रघुवीर ने माहौल को हल्का बनाने के लिए कहा, "पता है,.. पता है मैडम। तभी तो ओटी 14 फ़रवरी का बुक करवाया है,.. आपको वैलेंटाइन्स डे का गिफ्ट देने के लिए,.."

पर्यावरण की चिंता

"आज मॉर्निंग वाक पर नहीं गए?"पत्नी ने पूछा।

"अरे नहीं सिगरेट नहीं मिली, रात को खत्म हो गई थी, फ्रेश नहीं हो पाया। अब दुकान खुलेगी तो लाऊंगा नीचे जाकर। "पति ने कहा।

पत्नी बोली, "देर हो गई तो यहीं सड़क पर ही टहल आना आधा घण्टा, पार्क में तो जा नहीं पाए।"

पति ने नाराजगी जताते हुए कहा, "यहाँ सड़क पर कहाँ टहलूंगा यार, लोगों ने इतनी गाड़ियां खरीद ली हैं कि सड़क पर प्रदूषण के कारण चलना मुश्किल हो गया। लोगों को पर्यावरण और दूसरों के स्वास्थ्य की बिलकुल चिंता नहीं।"

पत्नी हैरानी से पति का चेहरा देखने लगी।

हिंदी दिवस

"हैलो, गुड मारनिंग सर! सिबनाथ बोल रहे हैं। कैसे हैं साहेब?"

शिवनाथ ने बैंक के हिंदी प्रकोष्ठ के मुख्य कार्यकारी अविनाश को फोन लगाया था।

"बोलो शिवनाथ! आज इतनी सुबह सुबह कैसे याद किया?" अविनाश ने आश्चर्य से पूछा।

"अssssss,.. सर! हिंदी दिवस आ रहा है। कुछ बजट पास कर देते हमरा ब्रांच खातिर तो बढियां से सिलिब्रेट हो जाता।"

"पांच हजार में हो जाएगा?"

"अरे सर,.. आप तो जोकिंग कर रहे हैं। इतना कम में कैसे होगा। काम से कम फिफ्टी थाउजेंड तो कीजिये। कल्चरल प्रोग्राम कर देंगे। तीन-चार गो लेखक, दू गो कबित्री लोग को भी बुलावेंगे। कुछ सौ-पचास का ऊ लोग को भी देना होगा,.. कल्चरल प्रोग्राम में डांसर लोग भी तो दस-दस हजार ले लेगी,.. पान-सात हजार मियूजिक वाला लेगा,.. फिर खा-पीना सर,.. समझ रहे हैं ना,.. और आपको भी आना है,.. आपको भी आठ-दस हजार का गिफ्ट देंगे ना सर!" शिवनाथ ने एक ही बार में पूरी बात समझा दी।

अविनाश पुराना आदमी था। जल्दी समझ गया। बोला, "ठीक है,.. ठीक है,.. सुनो लेकिन कलाकार ऐसी बुलाना कि मने,.. नखरा न करे ज्यादा। समझ रहे हो न। प्रोग्राम बढ़िया होना चाहिए। फुल रिलैक्स मूड में। तुम तैयारी करो। मैं सैंक्शन करवाता हूँ।"

शाखा में वाकई खूब धूमधाम से हिंदी दिवस मनाया गया।

लेखकों को सौ-सौ रूपए मूल्य की पुस्तकें और गुलदस्ता देकर सम्मानित किया गया। उन्हें सम्मानपूर्वक विदा करने के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ, जिसमे सबने भरपूर मनोरंजन किया। हिंदी की सेवा करने के बाद सभी कर्मचारी चैन की नींद सोये।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

शिखर चंद जैन

६७/४६ स्ट्रैण्ड रोड़,
तीसरा माला, कोलकाता
पिन- ७००००७

Email- jainshikhar6@gmail.com
Mobile - 9836067535

जो अवसर हमें कभी चाहकर भी न नहीं मिल सकता था, वह अनचाहे ही मिल गया। एक तो चारों तरफ से बीमारी से जुड़ी नकारत्मक खबरें ऊपर से आजीविका व उपार्जन के उपायों में भी व्यवधान। ऐसे में हताशा, निराशा और उदासी स्वाभाविक ही है। अब चयन आपको करना है कि इस वक्त में सृजन और पठन करके कुछ सार्थक किया जाए या दुःखी रहकर अपनी किस्मत को कोसते हुए वक्त को यूँ ही गँवा दिया जाए। इसमें कोई संदेह नहीं कि सृजन में बड़ी शक्ति होती है और यह मस्तिष्क को नकारात्मकता और दर्द से उबरने में मददगार है। यह तथ्य दुनिया के कई अनुसंधानों से प्रमाणित भी हो चुका है।

ऐसे में अंतरा शब्दशक्ति की संस्थापक एवं संपादक डॉ. प्रीति समकित सुराना जी ने हमें ऐसा सुअवसर प्रदान किया कि पूर्णबंदी के दौर को हम एक अवसर के रूप में ग्रहण कर पाए। अंतरा शब्दशक्ति का आत्मीय आभार और अशेष साधुवाद।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-207-4

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/